

५३२४

[illegible]

26

सुखदुःख

ननरवजसूर्यप्रह्लादगमाश्च दृढमयसमनसदागुमहाश्च कल्पकलुकमालधननगना
धकवनवजसिनश्च माध्वनिस्त्वनगावपनमाश्च साध्वतसहजमहावधनश्च गहि
जिनजिक्समयश्च कायनिर्वधनश्च वक्रधनश्च कृष्णकृष्णपद्मावकसुगताश्च मधवेमधि
नघनवमोक्तश्च कृष्णकृष्णआदिमूलनवनश्च यमामिसूनगवजधोना ॥ ३१ ॥ ॐ ॥
१नागवधुमिनि ॥ गानशूनमाथ ॥ हाठारनलाक्रियानिनसम्बन ॥ धनयिकवातिनरुसाश्च
जियवायनमणि यामधनश्च मकुठकभादिगवनाश्च ॥ ३२ ॥ ननमान्वसिवनदेयाश्च
सहजसुदनीभारकालाश्च रुमविनाजिनवजवानाहिश्च रुदामहियायिनसानाश्च ॥

विहाय न वर हरु मय न कश्चन रुनयिगाभाना शगगलनिववा निववधिन जादा शभर
 मलुल रुवनीना शतिय धनूषदा गच्छादिगनासम्भन पयिसुयिषु नरुवगा ना शरुम
 धिनाहिन वज्र वावाही शठक्र विनूद रवीश्रुम्भाना शगवसि लीना वज्र जायि यावल श
 सतगुत्रुवन लज्जाना धरुमया आनन्द रुलिगन मलुल सव वज्र वावाही ॥ ० ॥
 ॥ ३२ ॥ ॐ ॥ नागभाद्र गीवि ॥ गालजगति ॥ वकि वकि मादिन दाहिनि वलुनी ॥
 ॐ श्य कानश्रु माघ सिद्धि वागन सीराव श जेयाह नूव वज्र कवा न शरुमद्रु मेघादि न नि

लवर्गुस्वरावा ॥ ॐ ॥ यश्रुत भागतक लुका निवर्णदि श सव सत्व डका निव शा लीव
 कि मलु ॥ ॐ ॥ ॐ श्य कानश्रु माघ सिद्धि वागन सीराव श जेयाह नूव वज्र कवा न शरुमद्रु मेघादि न नि
 नूषदा गिर भाद्रुशी रुव नूषु मलु कना गिर रुन गिग्व सामि श्रु रावन स्वराव ॥ ॐ ॥
 ॥ ३३ ॥ ॐ ॥ नागभाद्र गीवि ॥ गानव कता न वकि कलुल कलि नाव के मघन
 उषित गिनि व नूगन लडिन माना श सन वकि वकि नेया रुस्म विउ धित गगल ता निव
 इनि वाना ॥ ॐ ॥ श्रुम्भ सगिरु नूव द मानू काना जगना थशी सम्भन नाया शवज्र कना
 नक हाथ्य धनिया कलुदिन द्रुषदा गिर सुरुट जा गिगा कमल विहा गिगना महास

सुप्रसन्नमस्तु २७

खमनिपुसागश्चञ्जवावाहि आलिङ्गलसम्भननावयिवद्रुहृगश्चालिक्कीदकिहृन्
व. अद्भुतवक्रुलनयसादश्च सहजसद्विद्वेयागमवक्तिकर्णुपाहृन्ववलेनयसादश्च
यह्ना आलिङ्गलहृन्वनिवावर्णुविनासयिष्ठुन्यकरना ॥ ५२ ॥ ३५ ॥ ५० ॥
१ नागदसनामकविनागलमा ० ॥ सुप्रसन्नमस्तु २७ ॥ सुप्रसन्नमस्तु २७ ॥ सुप्रसन्नमस्तु २७ ॥
सुप्रसन्नमस्तु २७ ॥ सुप्रसन्नमस्तु २७ ॥ सुप्रसन्नमस्तु २७ ॥ सुप्रसन्नमस्तु २७ ॥ सुप्रसन्नमस्तु २७ ॥
न कृविगकृदिव्यश्चञ्जहृन्वक्रुमहासूहनामाश्च नृपतिगीतवननमनाग्यश्चञ्जवकयानम
सुप्रसन्नमस्तु २७ ॥ सुप्रसन्नमस्तु २७ ॥ सुप्रसन्नमस्तु २७ ॥ सुप्रसन्नमस्तु २७ ॥ सुप्रसन्नमस्तु २७ ॥

सुप्रसन्नमस्तु २७

नश्चञ्जस्वयं २७ ॥ सुप्रसन्नमस्तु २७ ॥ सुप्रसन्नमस्तु २७ ॥ सुप्रसन्नमस्तु २७ ॥ सुप्रसन्नमस्तु २७ ॥
सयनाश्चञ्जनाहृन्वक्रुमहासूहनामाश्च नृपतिगीतवननमनाग्यश्चञ्जवकयानम
१ धनसिद्धावाकृद्गुणमिदं २७ ॥ सुप्रसन्नमस्तु २७ ॥ सुप्रसन्नमस्तु २७ ॥ सुप्रसन्नमस्तु २७ ॥ सुप्रसन्नमस्तु २७ ॥
गुणमिदं २७ ॥ सुप्रसन्नमस्तु २७ ॥ सुप्रसन्नमस्तु २७ ॥ सुप्रसन्नमस्तु २७ ॥ सुप्रसन्नमस्तु २७ ॥ सुप्रसन्नमस्तु २७ ॥
गणकनञ्जकगिनिनयनमात्रवञ्जगणकृदनि ॥ ५३ ॥ ३६ ॥ ५१ ॥ सुप्रसन्नमस्तु २७ ॥ सुप्रसन्नमस्तु २७ ॥
गनललीनमात्रकमलकृनिहारयिगाववाञ्जयिनावयिसहजसिन्धुपिनीश्चञ्जवकयानम
धनाश्चञ्जकिषिलकपुष्पकृन्दलकपुष्पकृन्दकसाखश्चञ्जवककटिपाडमञ्जवञ्जवञ्जव

हृदय

[illegible]

२२ विविदि

गोत्रवर्धय ॥ शिववनकलिंगमूर्ति ॥ अन्ननायक ॥ हिनयवर्ति ॥ नाचयावजसत्त्वपलमध्वनल
 नवति ॥ ॐ ॥ नस्मिस्तुभ्यं नमः ॥ दशसूर्यसाहास्यवर्गा ॥ वक्रविह्वयवा ॥ मलज्जन्ना
 यनगत्ववर्गा ॥ ३७ ॥ ॐ ॥ धनइन्द्रहय ॥ चक्रिकुल ॥ अथवाशिदलसर्वा ॥ रुद्र
 न ॥ नागविहास ॥ गानमा ० ॥ उदितागलवयपवनधूगा ॥ वलसादाममीकासगीता ॥ ॐ
 धानइन्द्रहयनिष्ठाव ॥ विगा ॥ अथयनिवेजनमा ॥ कृगगा ॥ ॐ ॥ दिनकनमकुलमध्यग
 गा ॥ सहजा ॥ नगवससवकृगा ॥ ॐ ॥ दणा ॥ अनिरययतिनिहगा ॥ दवा ॥ सननन ॥ वि
 नमिगा ॥ ॐ ॥ ३८ ॥ ॥ नागकक्र ॥ गानमाथ ॥ जयवायुवा ॥ दवी ॥ नूवदवी ॥ घन ॥ लसयन
 ॥ म ॥ वेति ॥ ॐ ॥ नतवे ॥ रुद्र ॥ रुद्रगता ॥ वजवा ॥ नादिकुरुगिननमिगा ॥ ॐ ॥

शुद्धि ३।

विकसिद्धा ॥ ५२ ॥ गूढादिषाविषि समाफ ॥ ५३ ॥ ॥ नागहेनवि ॥ गालर्जमान
॥ गऊजिनडर्द्धहा ॥ धधनिया ॥ कमलकूलिग ॥ गूगवानां ॥ २७ मन्त्रकन ॥ निकृथा ॥ लजि ॥ २२ ल ॥ वा
मखलांगकपालन ॥ ५४ ॥ ॥ श्रीसम्भवायैवा ॥ रुनिठ ॥ कऊवृनानूल ॥ २ मानयि ॥ नवायिया ॥ निन
माया ॥ सहगुरु ॥ गूगगाललिना ॥ पाणवक्त्र ॥ मूढाद ॥ गहा ॥ ध ॥ धनिया ॥ डनन ॥ धिनमाला ॥ २
विश्वकूलिग ॥ गूढवल्ड ॥ कडाशत ॥ व्याघ्रवन ॥ मषट ॥ मूडा ॥ ५५ ॥ ॥ गूली ॥ टय ॥ ट्या ॥ रुनवा ॥ ययि
न ॥ ध्वन ॥ कालिना ॥ छिदिन ॥ मूडा ॥ २ ॥ निल ॥ रुनि ॥ तना ॥ हित ॥ कन ॥ का ॥ मय ॥ वड ॥ मूख ॥ गूति ॥ विक ॥ गान्
न ॥ ५६ ॥ ॥ गूति ॥ सवी ॥ नवा ॥ न ॥ ध्वन ॥ ना ॥ मक ॥ नि ॥ नि ॥ वक्त्र ॥ महा ॥ वि ॥ न ॥ वि ॥ ना ॥ २ ॥ क ॥ नू ॥ ग ॥ स ॥ ना ॥ ग ॥ वि ॥ न

अथ दशवा ३२

[illegible]

विमल ३३

हृदयविरुषिता ॥ ॐ ॥ सूर्यमल्लमागतालुवमूर्तिश्च नवगिन्मालसूक्ष्मादिना ॥
॥ ॐ ॥ सतगुणवतनसिनेगतधनियाश्च वज्रवाहाहि आलिगिता ॥ ॐ ॥ ५३ ॥
१ नागरुनवि ॥ गालवैया ॥ अश्वकृष्णपाल दिगंविदिगं हवन ॥ ध्वसानमानवठुनघनश्च
गगदासखनगगदामनयुर्नकावा ॥ गगदादामात्रधैथवाजियान ॥ ॐ ॥ ह्रूँ ह्रूँ नमामि
धैव आहारशुकिनीयश्चरुवति ॥ स्नानशुकिनीशानदशगहगगा ॥ २ पूर्वडरुनपक्षि
मदक्रिदावठुहवन विघनमानविघनखण्डियाव २ वज्रशुकिनिधानवगालशुकिनी ॥ च
अलशुकिनीवठुनदवी ॥ ॐ ॥ सिद्धिनीयाधिनी ॥ अश्वकृष्णवाकिनी ॥ खर्वागयनशु

विमल ३३

अश्वकृष्णदलुहसुशुकिनीदिकिनीवडसिकवाजिनी ॥ धालनवादनकाणवदनी ॥ ॐ ॥
कि नञनतादवीशुकिनीउरुययिस्रल ॥ पक्षमूद्रारुनगहृषणीयाश्च खर्वाशुहृठकव
ऊधर्मुखित्वांगयाधमश्चगमामिदवीशीहानध्वनी ॥ ॐ ॥ ५३ ॥ ॐ ॥
१ नागमालव ॥ गालमाथ ॥ वज्रनिधानवगानावकुलिनी २ सिद्धिनीयाधिनी ३ अश्वकृष्णवाकि
नी ॥ ॐ ॥ नमाविष्णीयागमन्वनहानध्वनी २ शिनेठदवीगिहवनयविष्णा ॥ ॐ ॥
पूर्वडरुनपक्षिमदक्रिदादिगदवी २ शुकिनीदि किनीवडसिकवाजिनी ॥ ॐ ॥
वठुनदिगठश्रुलनकुदवी २ शिनिनीदवीनावकुदवी ॥ ॐ ॥ हनिहववका ॐ ॥

पुनः प्रथमं वाच्यम् ५१

५२ मन्त्रावली ५३

शुभ्रगणेशश्चाज्यागिनीसमनसरावा ॥ ५१ ॥ ॐ ॥ नागदेवता ॥ गालवय ॥
पैकृत्यमगतमनियान् समयाचार्यविष्णुहस्त २५३ दिग्देवावलगात्तरुसकं जानयति
पिबिष्मनिववात्र ॥ ५२ ॥ शिववीरध्वनवलिदानदहा दानपतिशुश्रूवकोवृत्त ॥ ५३ ॥
पूर्ववेनःवन दक्षिनवत्तसैरव यक्षिमश्रुगारुजिनयापियान् २५४ वज्रमाघसिद्धि
मोचमृकृष्ण्वालिमानवडवकथपियान् ॥ ५४ ॥ समाधिष्टीसम्भनमाचकालवड
हवऊविष्णुस्वत्त २५५ नानावाधिसुत्तश्रीर्वादिवालिमानवडयापियान् ॥ ५५ ॥
सिंहनादवाजियान् उमन्वाजकं शुभ्रयागिनीविधियान् उमन्वाजकं या शुभ्र

काय

मन्त्र

मन्त्रसमयजुः ५६

५७ यागसमयजुः ५८

यागिनीमनियान् २५६ जालन्धनियुक्तकर्तुयागभव्यायावालिमानवडवकथपियान् ॥
॥ ५६ ॥ ॐ ॥ नागदेवता ॥ गालमा ० ॥ मलुलसमयवक्रमलुलस
पुल्लुश्चादगहवडवात्रवयन ॥ ५७ ॥ जानलुकत्रयष्टीसम्भनयागिनी २५७ याखकना
नोदवीगान्नी ॥ दक्षिनीला माखलुनादात्रपिनी २५८ वाविमानवडवापियान् ॥ ५८ ॥
कायवाकविरुतिनीखवन २५९ दानपतियाधुश्रुवगान्नी ॥ ५९ ॥ यागयागिनीमनास
मनसराव २६० शुभ्रमभनधीहृव ॥ ६० ॥ ५९ ॥ नागदेवता ॥ गालमा ० ॥ ॐ ॥
कृष्णरावमृगागेनीलजीमूगसिकाध २६१ खर्वलवापलिनयनावाविषदनर्यक

५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥

महानया ५२

ना ॥ क्र ॥ इवधोमहाकालकृपावमूर्ति ॥ मद्धिसिद्धिवनपागा ॥ कनगिखपनख
॥ विबुलमानदय्यसिहाविगा ॥ क्र ॥ नियूद्धयापनियखालीदा ॥ व्याघ्रवर्ममृष्ट
मालारमोलीअकारपजिनवनाभसुनयाविगमहावीना ॥ क्र ॥ इवकलालक्षानेजि
काउरुक्रुडिडकंभा ॥ रुजंगआरुवगलुषिगदहालीअस्याविश्यकना ॥ क्र ॥
शीदवमहाकालजिउवनयापिग ॥ दवासुवननसंविगा ॥ सगगुनवनगधीनाग
रुनवनगकमलवेदिगा ॥ क्र ॥ ३० ॥ ॥ रागललिगा ॥ गालयेपा ॥ कात्यादिब
हिगअकारपजिनमूर्तिगसिद्धिकातिजनगिनिउवने ॥ खर्वलेवाफलहालिगदृकाव

कात्यादि ३० वा ५२

अवनागाहनगकमूर्दण ॥ अरुवरुयहनगीसुनइवमर्जन ॥ मानवलमर्दनपायरुन
॥ विविविनिपुखलुन ॥ विघ्नघनकदन ॥ ०००० आदिलोकपालसंगासकने ॥ दहिन
कवतिधनवलुजियवावन ॥ चवनगइयिनमनोसुवांगगिगमने ॥ वामखेदीगधनेव
ककपावा ॥ रुवसमूडछाषनमलुपाने ॥ घानयूइरुवानाअडठहास्प ॥ इवकलालला
लजिहा ॥ व्याघ्रवर्मनिवशनननमूदमाल ॥ अलिबलिखादनसिद्धिरुले ॥ गभवमि
सुनगजगुनगलक्षाने ॥ इरुगावनासनसीसावकनजी ॥ इवधर्मभसुन ॥ सिधपविनक
॥ शोमहाकानगवपादशनभा ॥ क्र ॥ ३१ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ रागववात्रिगागानमा ॥ ०

गा। वक्रलाद विष्टी मगलु निरसयल सुवचन्दि गवचल ॥ अन्नगमद्विसिद्धिबल्यदा ॥
 ॥ नन्दनवनमिववन्दनगवच ॥ अन्नगकुसुमपाणिजातवन ॥ नितागं गमसनवागमनि
 गाव ॥ अन्नगगीधसुनिर्मना ॥ ३ ॥ अन्नगवच अन्नयागिनीदवी ॥ अन्नगदवा सुवक्रगया
 ना ॥ अन्नमहासुयइतिनिवावनी ॥ अन्नगविष्टनिवावनी ॥ ४ ॥ विष्टयापिगगा
 न्निदवी ॥ अन्नयनिनानयागिमये ॥ अन्नमथसुखरुलदायनीदवी ॥ अन्नम
 ठुहवनगति ॥ ५ ॥ ॐ ॥ ॥ नागयज्ञजलि ॥ नासमाध ॥ उद्दिगलवनकमला
 सनकिलनललिगदा ॥ वनसुख ॥ नीमलदय ॥ कन्नमयनाधदहि अन्न

यवनयुदागा ॥ ६ ॥ उन्नदवशगह ॥ गसनना ॥ शिखवनयापितजगगडयानिया ॥
 यनमामिवगमलाकध्वना ॥ ७ ॥ कनकलतमगिहलविहविता ॥ कनकधुवग
 धाविश्वामकनधनवलद ॥ अन्नवन ॥ सुह ॥ अन्ननन्दमृति ॥ अन्ननलजकुकिननग
 नयुजियालेललागवनसिनेगतधलिया ॥ तिमिनधोनेखलमाकूपदागा ॥ ८ ॥
 नयापइः खहनना ॥ नकवर्णमुखन ॥ सुत्रावनासुवन्नरुगसैयु ॥ ९ ॥ नखखविग
 गधालि ॥ लाकध्वन ॥ मलयमल्ललखवविजय ॥ १० ॥ ॐ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 १ नागललिग ॥ इजमान ॥ अन्नदलसनाजउ ॥ इवयकाधिग ॥ ११ ॥ अन्नमूनिवनधनलावना ॥

卷之五

॥ धरुदहितवज्रपाणिवामदामलपाणिनमापि दीधर्मनायमहाशुनि ॥ दहितकिङ्किविषय
मकुण्डिक ॥ १ ॥ विविग्वावनधारी शूरययदा ॥ २ ॥ कावृषमानसनिर्मलरुदयाशु
गतउवाचवावहवयदा ॥ ३ ॥ जनम २ सुगगवतकमरु २ तुम्हासुमनधोमाङ्गगा ॥ ४ ॥
॥ ५ ॥ ॥ ६ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ८ ॥ ॥ ९ ॥ ॥ १० ॥ ॥ ११ ॥ ॥ १२ ॥ ॥ १३ ॥ ॥ १४ ॥ ॥ १५ ॥ ॥ १६ ॥ ॥ १७ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १९ ॥ ॥ २० ॥ ॥ २१ ॥ ॥ २२ ॥ ॥ २३ ॥ ॥ २४ ॥ ॥ २५ ॥ ॥ २६ ॥ ॥ २७ ॥ ॥ २८ ॥ ॥ २९ ॥ ॥ ३० ॥ ॥ ३१ ॥ ॥ ३२ ॥ ॥ ३३ ॥ ॥ ३४ ॥ ॥ ३५ ॥ ॥ ३६ ॥ ॥ ३७ ॥ ॥ ३८ ॥ ॥ ३९ ॥ ॥ ४० ॥ ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४६ ॥ ॥ ४७ ॥ ॥ ४८ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ५० ॥ ॥ ५१ ॥ ॥ ५२ ॥ ॥ ५३ ॥ ॥ ५४ ॥ ॥ ५५ ॥ ॥ ५६ ॥ ॥ ५७ ॥ ॥ ५८ ॥ ॥ ५९ ॥ ॥ ६० ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६२ ॥ ॥ ६३ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥ ॥ ६८ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ७० ॥ ॥ ७१ ॥ ॥ ७२ ॥ ॥ ७३ ॥ ॥ ७४ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७६ ॥ ॥ ७७ ॥ ॥ ७८ ॥ ॥ ७९ ॥ ॥ ८० ॥ ॥ ८१ ॥ ॥ ८२ ॥ ॥ ८३ ॥ ॥ ८४ ॥ ॥ ८५ ॥ ॥ ८६ ॥ ॥ ८७ ॥ ॥ ८८ ॥ ॥ ८९ ॥ ॥ ९० ॥ ॥ ९१ ॥ ॥ ९२ ॥ ॥ ९३ ॥ ॥ ९४ ॥ ॥ ९५ ॥ ॥ ९६ ॥ ॥ ९७ ॥ ॥ ९८ ॥ ॥ ९९ ॥ ॥ १०० ॥

317



वाक् ॥ ॥ ॐ ह्रस्वसमाकमम् ॥ स्वस्ति वः कृत्वा वदः स्वस्ति देवाः सप्त ककाः स्वस्ति सर्वाणि रुग्णानि स
 र्वकात्रेदिनीनुवः वदयन् नूरावने देवता नानि नय । आयाथः समस्ति युतः सखा धर्मः समस्ति धर्मा ॥
 स्वस्ति वादिपदा शानु स्वस्ति सुचरु वादः । स्वस्ति वावदती माग्ने स्वस्ति युवागज सुत ॥ स्वस्ति वा
 स्वस्ति दिवा स्वस्ति मध्यादिनास्ति त सर्वेषु स्वस्ति वा शानु मायेषा न्याय माग मरु ॥ सर्वसत्त्वाः सर्वपाषाः
 सर्वरुगावकवलाः सर्ववसुखिनः सर्व पर्वसन्तु निग्रामया सर्वरुदाहियः शानु माकथि न्याय माग म
 त ॥ यानीदरु गानि समागतानि स्तुतानि रुमावर्धवा कलिक ॥ कर्वन्तु मेदी सतर्त पडा सदिवात्र वा
 चवत्तु धर्मा ॥ यानयन्तु जमानस्य आयुः प्राणायामनाथः श्रीमहादेव लसैया य कामेनार्थः श्रीम

तदीधीयक समप्रवज वावादी आवाधन ऊह्वरु निमिगर्त । ॐ ह्रस्वसमाकमम् ॥ ३ ॥ अग्निस्तु यन ॥
 ॐ वदयन्तु नः ॥ ३ ॥ सर्वरुमेनवां जन ॥ ध्याता ॥ तत्कलितानि सध्व यं कावर्त यद्ममालं य
 तदुयवित्रं जगं तिकाष्ठाग्निमधुलं वृका वाडव चीतवर्तु भकमुखं चतुर्हर्त वार्मिदलुकमलु वृ
 धव सर्ववदयकमालाध्वं यीताववा रुवतारुषर्त यक्षाय विनिनं चित्तु जटामकूटध्वनि
 वदसत्त्वो लहृगमोलिर्ग समयाग्निविश्व ॥ ॐ नृदहिमदाहृत दवविदिर्त सक्तमग
 हिगाहृतिमादायं आसि सनिदिता रुव ॥ ॐ नृदहिमदाहृत दवविदिर्त सक्तमग ॥ ॐ ह्रस्वसमाकमम् ॥
 ३ ॥ ॐ नृदहिमदाहृत दवविदिर्त सक्तमग ॥ ॐ नृदहिमदाहृत दवविदिर्त सक्तमग ॥ ॐ ह्रस्वसमाकमम् ॥

रुद्रं ॥ ॥ गदन्यादिः ॥ ॥ ॐ श्रीः खपुत्राहं ॥ यादव ॥ ॥ ॐ जा स्वाहा ॥ ॥
 घृतादिः ॥ ॐ श्रीः खपुत्राहं ॥ घृतादिः ॥ ॐ सर्वपापानघनघटी स्वाहा ॥ ॐ जमा
 नद्यलकाः ॥ ॥ गताः शिमुखं वंकायलयवरुलयमानं शुक्रवर्कविश्व ॥ ॥ ॐ श्री
 (मयस्वाहा ॥ घृतादिः ॥ स्वयं वदय ॥ ॥ जागनयूजा ॥ ध्यान ॥ कृत्वा यत्रिदिकपारु द्वापि स
 दलययकानिखदं गद्यतयूषु कृष्णप्रद्युम्नसावक ॥ ॥ श्रीकर्मन यंत्रतथागतया स्वातवाय
 यदाभुति ॥ कृष्णवृषावसते ॥ ॥ श्रीकर्मनसिधिलसयेकावदय ॥ ॥ ॐ श्रीकर्मय
 स्वाहा ॥ श्रीकर्म ॥ ॥ ॐ वज्रसामायस्वाहा ॥ यत्नासि ॥ ॥ ॐ वज्रगोत्रयस्वाहा ॥ खयवसि ॥ ॥ ॐ वज्र

वदयस्वाहा ॥ श्रीमामर्जसि ॥ ॥ ॐ वज्रकवलायस्वाहा ॥ वटसी ॥ ॥ ॐ वज्रयस्वाहा ॥ ॐ वज्र
 सि ॥ ॥ ॐ वज्रगनिधनायस्वाहा ॥ गमिसि ॥ ॐ वज्रविष्टकायस्वाहा ॥ श्रीवसुसि ॥ ॥ ॐ वज्रवनायस्वा
 हा ॥ श्रीवसि ॥ ॥ ॐ वज्रविश्वायस्वाहा ॥ वज्रतनू ॥ ॥ ॐ मधूनस्वाहा ॥ मधून ॥ ॥ ॐ श्रीवका
 यस्वाहा ॥ श्रीवक ॥ ॥ ॐ सर्वपापघ्नसमनायस्वाहा ॥ वैकंथसि ॥ ॥ ॐ वज्रसहकायायस्वाहा ॥ श्रीः
 मुस्य ॥ ॥ ॐ सर्वकलयुगसमनायस्वाहा ॥ कंदवर्गलियुक्ति ॥ ॐ निशूदय ॥ ॥ ॐ श्रीयुक्ति
 तवडायस्वाहा ॥ कृष्ण ॥ ॥ ॐ वज्रायस्वाहा ॥ द्वाकृष्ण ॥ ॥ ॐ सर्वपापघ्ननवडायस्वाहा ॥ ॐ सर्वपापः
 दहरस्वाहा ॥ किलस्य ॥ ॥ ॐ वज्रयस्वाहा ॥ श्रीवज्रयस्वाहा ॥ ॥ ॐ वज्रवगायस्वाहा ॥ यव

वंशसंख्यादि॥ तत्त्यन॥ ॥ मताग्निजिह्वायां वंशं कावलयुक्कवडं विहाय॥ तत्सर्वं ह्यादिकं मूल
 मनुष्यं कुरुयात्॥ ॥ दत्तसालं च कद्वयं मूलमनुन॥ वृक्षीद्वय॥ ॥ मधुलहनादुक्तिं स्वस्तिवाक्॥
 धूलान्नं केशधियकं॥ यज्ञादुक्तिं॥ तत्त्यन॥ ॥ उक्तिं मधुलहनादुक्तिं॥ ॥ यत्नं युक्तिं ह्यहवः
 सा दशकिं या मधुलहना धूय जाय नीलाङ्गनं दवयुक्ता दवतसंयुतं वादीदत्तसा तत्त्यन॥
 मत्तं तावत्वा लं च कद्वयं वृक्षीद्वय॥ दवतादुक्तिं॥ स्वस्तिवाक् x वंशालाप्रयुक्तादुक्तिं॥ तत्त्य
 न॥ ॥ मानादुक्तिं वसा॥ दिगवतिविद्य॥ ॥ पूर्वोऽं धवली धवली यध्वं सनी रंजनी य
 रंजनी विमनि किं यवध स कव सावधिसाववति धूवधवं सूवधवली सूद्ववधं धामवति सा

वगं जानि स्वस्तिमु दानयतं ऊजमानस्य पूर्वस्यां दिशि स्थात्ता॥ १ ॥ दक्षिणं उं सानि साववति
 कानि काववति किं कसिकि विष्टि किवति धवलि वधलि रूमि धवलि हिमवति आनि ववनि सात्राग
 जानि स्वस्तिमु श्रमूकस्य दक्षिणस्यां दिशि स्थात्ता॥ २ ॥ यश्चिमा उं धर्मवत्राग वववति ववनि
 विज्ञात्रं ग्यवि वसि सासनं यविकयि व वन्द्या विवि वनि विवाडिनी विध्वनि व्रति श्रवणं जानि स्वस्तिमु ऊज
 मानस्य यश्चिमायां दिशि स्थात्ता॥ ३ ॥ उरुव उं स्वर्गं स्वर्गगङ्ग विवर्तनवद्वराजने वन्दः
 वयव किमयवर्त स्वर्गांग कृत्तिल कवाह उकाकि वगवति विरु कानि जानि स्वस्तिमु दानयतं ऊज
 मानस्य उरुवस्यां दिशि स्थात्ता॥ ४ ॥ विदिगं उं वध्वं वध्वं धाय वध्वं धव वडवड धाय व

कधवस्ति वसाव श्रववश्रुननिब्धनी श्रवनिदवनीसूत्र ववाययाक साववनीनानिखलाशु
ऊऊमानस्य दिशिदिशः ४ सादा ॥ ॥ कनकनावलि ॥ ॐ श्रीः हूं डी कनकनसर्वसत्त्व वसेकलिः
सर्वरुयरुयकृत्रिब्धवलि गन्धयशधयदीयेवाकनंदयाम्पदं सर्वदेवतागयकृगन्धवां सूत्र
गन्धुकिन्न वमहावगादयय (धर्वयथेष्ट) रुऊथसादययिवथडिद्यु मम ४ मनसिद्धिं युयुक्तः
ॐ श्रीः हूं डी हूं रुद्र सादा ॥ ॥ थनमहावलि विद्या ॥ ॐ ततावलि रुवना वलिगन्धविद्या
वंकावली श्रमिमलुलं कंकावली मिमूर्धु आकावली यद्य रुऊनं नगरुकादिकं ॥ ॐ हूं गोंडी रवं ॥
लां मां पां गोंडी ॥ नदधिल्लितयं वामन पञ्चयदिध रुद्राडी रुकावरुनं वलु यथाकर्मयवृत्ति ॥

गन्धवर्तुविद्यारुद्र व वायुयुक्तिरुलितानि तावविलिना विज्ञाकृतादिकं भरुनवर्तु रुनवर्तु ॥
दधिरुगंदष्टा रुगायालालसवर्तु हूं रुद्राधमूखामृगमय धुकखलांगविलिना दवव्यामनं न
दूयविश्रालिकात्रिडं चंडाक ॥ ॐ श्रीः हूं ॥ वसिष्ठः सर्वतथगतदीनां वाधिविरुमिर्न सागवादि
रु श्रुमनमाकृष्यकर्मकाविलिनमवः लाकयन ॥ आकषेन यायादि यूप्यन्यास। अकिनीत्या
दि ५ ॥ ॥ श्रुन्यान्यानुगतासर्वधम्मा ॥ ॐ यवस्यवानुगतासर्वधम्मा ॥ ॐ नृत्तकानुयवितासर्व
म्मा ॥ ॥ दयायमानं समययमानं नदृकवाचधयवयमानं ॥ मनेसन नरुवेयवंता ॥ दयायमाः
नृगुरुता ४ ॐ श्रीः वडाललिलाडं हूं वंही ॥ वडसत्त्वहूं ॥ ॐ वडावविहः वडावावाही सम

मंगं धमात्ता धयमलितियविप्रिश्चरुका गृह्णुहृजनुयिवनुवदं ॐ दयकर्मसकलं शगनु ॥ ८॥
 लेन्यनवडी सकदवमंथे ॐ दमलिति गृह्णुमविनिष्ट अमियमानित्रीतिरुयतिथ आर्ययतिथाः
 यधनाधियथ ॐ गानरुगाधियनिष्टदया मउदवलाकियितामहाय देवा समस्त मवडव ना
 गा धमाधलागुञ्जगनेगमता यनियनित्वकानिवययानि स्वकस्वकास्वयदिशा सुरुग गृह्णुहृ
 त्वांसर्वसंसेन्या मयुगमिणस्वजनसमता धूर्यं वलियुष्य वलिनियदुंके रुजनुजिधुंनुयिवनु
 वदं ॐ दयकर्मसकलं शगनु ॥ १२ ॥ एकदृक्कामो नता यवतककुलं गृह्णु गामयाध्वय
 (थकनं शुन्यागावविमंघठः। रुजनं यवगतेरुमा मानगाह्रविः। षठ् कृष्णोऽमलानुदयव

(Faint handwritten Devanagari script)

धर्मस्त्रिखादा ॥ ३ ॥ श्रीमानिगवाधिवति श्रीधौडयत्राकाधिवत्र पत्रमंधवशुद्धवकस्य श्रीधौः
थागनरंजुमसुदवस्य आयुआत्रागका मनार्थ स्वस्त्रिमिद्धि डयसुख पुत्रमाय कामनार्थ स्वस्त्रिखा
दा ॥ ४ ॥ मूलपुत्र ॥ दानयनं ऊऊ मानस्य ह्यादि ॥ स्वस्त्रिवाक् ॥ उं न्ना (नदियदिगाविवादि
य महाप्रियदयकवावनाय दानयनं ऊऊ मानस्य आयुआत्रागका मनार्थ साक्षात् ल संयाय
कामनार्थ श्रीमत् श्री श्री श्री मूक दवना रुद्रावकसं कृष्णवनजह्मसंयुक्तु निमित्तत् पुत्रय २ यः
पुंदिनिष्ट २ हं रुद्रखादा ॥ ॥ पुत्रुचितकाय ॥ ॥ यश्च यदायपूजा मुक्ति ॥ तत्पन ॥
आमनकाय ॥ ॥ दंतुलितविलिविय ॥ सुत्रयूजा ॥ दक्षिना ॥ ऊऊमानस्य नानक मुनिमान

का ॥ दानयनं ऊऊ मानस्य आयुआत्रागका मनार्थ साक्षात् ल संयाय कामनार्थ श्रीमत् श्री श्री
वक्रसम्भवदवावादी रुद्रावकास कृष्णवनजह्मसंयुक्तु निमित्तत् नमस्तु वृद्धननकस्य ववा
य नमस्तु ससंयकाणका मनं सत्ययुक्ति ह्युदासावस्य सर्वसकासासद लोरुवनु ॥ ॥
दंतुलितमय ॥ कामयन ॥ ॥ ॥ कृष्णलीख ॥ आशिवाद ॥ सवन मादनी सिन्धु ॥ ॥
आहु स ॥ वक्रिकुल ॥ समय ॥ ॥ कृष्णशमयसंतयाव ॥ सपादु निविय ॥ ॥ पुन ॥ अग्नि
देवता शवयन ॥ उं न्ना रुद्रावक कृष्णयविमिता नरुं ऊ २ हं रुद्र खादा ॥ वृद्धिदय ॥ ॥ उं न्नाः
रुद्रावक दानयनं यथा विविधितं पुनय २ यः पुंदिनिष्टादु निमित्तत् य हं खादा ॥ ॥ ॥ अन्न

ॐ नमः श्रीवदुवावाये ॥ यथा मजा माथां थयनधूनकाव क्रियात्तरु ॥ शुभमधुन वलिः
विसर्जना सिन्धुवयूडा वरुस्य निममाधिजाय कलेशयूडा कुरुन्याग याचन्याग श्रयाति
व कोल्यासा ॥ ॥ तत्त्वाधीवदुवावाये सर्वयाययमावनी ॥ मावविध्वंमनीयवी वरुहरीरुनदा
यनी ॥ ध्यान ॥ गणनारिस्तु यंकावराविश्वदलयर्षी तद्वयविद्य सहदय सामसृष्ट्या निमध्वस्त
वकावगर्हकलियविनामन आत्मानं वदुयागिणी म्मावय ॥ द्विगुडाद्विमखीद्विगुडा ॥ येव
कलिकयावकावली ॥ मरुकाशवनयावनिनगानवडोवना वावद्यायश्चमडायेरुमिनामडा
रुनी ॥ यश्चवृद्धमरुमकुटी अर्द्धयय्यकटाधुवी ॥ उवासिन्दुवशादृष्य कोलास्यादक्षि ॥

गणः कावस्यावासतथायिवकृदयसमन्विता ॥ समृद्धियवमा ॥ धनमरुसखकवृत्तात्मिका ॥ ॐ नमः
का माहनीयवी आत्मानं सववावरां ॥ उद्वंदाधीमगवजवावादीयवी रुहावकाय याडीयुगिदु
स्वादा ॥ ॥ यय्यासा ॥ ॐ ३ सर्ववृद्धाकिनीयवजवर्धनीयवजवरावनीयवजयय्यीश्वराः
दुर्दुर्दु ॥ मध्व ॥ ॐ वं वदुवावादीवदुयय्यीश्वराः दुर्दुर्दुस्वादा ॥ ॐ हां यां यामिनीवदुयय्यीश्वराः
दुर्दुर्दुस्वादा ॥ ॐ डौ मां माहनीवदुयय्यीश्वराः दुर्दुर्दुस्वादा ॥ ॐ रुं डौ संचात्रिणीवदुयय्यीश्वराः
दुर्दुर्दुस्वादा ॥ ॐ रुं रुं संचात्रिणीवदुयय्यीश्वराः दुर्दुर्दुस्वादा ॥ ॐ रुं २ वलिकार्यवदुयय्यीश्वराः
दुर्दुर्दुस्वादा ॥ ॥ षट्का ॥ धीवा मावकन ॥ यं यो मरुवयूडा मुति ॥ वरुवधूकसंकोशना